वुहान भावना की खोज में

लेखक - एम.के. नारायणन (पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

05 अक्टूबर, 2019

"मामल्लपुरम शिखर सम्मेलन में, भारत को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह चीन को उकसाए नहीं, ताकि वह प्रतिकार की भावना में लिप्त ना हो सके।"

भारत और चीन के नेताओं के बीच दूसरा अनौपचारिक शिखर सम्मेलन चेन्नई के दक्षिण में तटीय स्थित शहर मामल्लपुरम में अक्टूबर के दूसरे सप्ताह में होने वाला है। पिछले साल अप्रैल में आयोजित वुहान शिखर सम्मेलन में ऐसे सम्मलेन करने के बारे में निर्णय लिए गये थे, जिसका उद्देश्य 'रणनीतिक संचार के उच्च स्तर' को सुनिश्चित करना और इसी तरह से अधिक से अधिक शिखर सम्मेलन आयोजित करना था। मामल्लपुरम सम्मेलन भी वुहान शिखर सम्मेलन का पालन करता है, लेकिन यहाँ सवाल यह है कि क्या पिछले 18 महीनों में दोनों नेताओं ने रणनीतिक संचार को बढ़ाने में सफलता हासिल की है?

जब चीन ने 2018 में एक अनौपचारिक शिखर सम्मेलन के लिए सहमति व्यक्त की थी, तो इस बात पर काफी संदेह था कि इस तरह के कदम से सहमत होते हुए चीनी पक्ष की ओर से क्या प्रस्ताव होगा। चीन उपलब्धियों की लहर में सबसे ऊपर था और इसलिए उसका यह मानना था कि उसे किसी को रियायत देने की जरूरत नहीं है, कम से कम भारत को तो बिल्कुल भी नहीं तब से, चीन ने भी भू-राजनीतिक और आर्थिक रूप से कुछ असफलताओं का सामना किया और भारत ने भी आर्थिक संकट का सामना किया। हालांकि, यह देखा जाना बाकी है कि इस शिखर सम्मलेन से दोनों देशों को कितना लाभ मिलता है।

स्थल का प्रतीकात्मक चुनाव

मामल्लपुरम की पसंद, शायद उतनी एकपक्षीय नहीं है जैसा यह प्रतीत हो रहा है। यदि पिछले साल राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने वुहान को चीन की आर्थिक लचीलापन और ताकत दिखाने के लिए एक स्थल के रूप में चुना था, तो मामल्लपुरम भारत की 'सॉफ्ट पॉवर' का प्रतीक है। मामल्लपुरम, पूर्ववर्ती पल्लव वंश का एक महत्वपूर्ण शहर है, जिसने दक्षिण भारत के इस हिस्से पर 275 ईसा पूर्व से 897 ईसा पूर्व तक शासन किया था, जो अपनी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है और दुनिया भर में व्यापक रूप से प्रशंसित है।

मामल्लपुरम और पल्लव वंश भी ऐतिहासिक रूप से प्रासंगिक हैं, चीन और भारत के बीच जल्द से जल्द दर्ज की गई सुरक्षा संधि के लिए (8वीं शताब्दी की शुरुआत में) एक पल्लव राजा (राजसिम्हन, या नरसिंह वर्मा II) शामिल थे, जिनसे चीन ने तिब्बत का मुकाबला करने के लिए मदद मांगी थी, जो तब चीन के लिए एक बड़ा खतरा बनकर उभरा था। चीनी पक्ष द्वारा इस सूक्ष्म संकेत को आसानी से नहीं भूला जाना, राष्ट्रों के बदलते भाग्य को भूल जाना और रिश्तों को बनाए रखने के महत्व के बारे में भूल जाना इतना आसन नहीं होगा।

अनौपचारिक शिखर सम्मेलन का उपयोग एक दुसरे पर विश्वास बढ़ाने के रूप में किया जाता है। हालांकि, यह स्वीकार करना होगा कि वुहान शिखर सम्मेलन के बाद से भारत-चीन संबंधों के मामले में थोड़ा बदलाव आया है। लेकिन डोकलाम और दोनों देशों के बीच विवादित सीमा चिंता का विषय बनी हुई है। वुहान शिखर सम्मेलन में ऐसी आशा की गयी थी दोनों देश संयुक्त रूप से अफगानिस्तान में एक आर्थिक परियोजना पर एक साथ काम करेंगे, लेकिन ऐसा गलत साबित हुआ। इसके अलावा, अफगानिस्तान में राजनीतिक स्थिति बिगड़ने के बावजूद चीन पाकिस्तान जैसे देशों के साथ यह सुनिश्चित करने में व्यस्त रहा कि कथित क्षेत्र में भारत की भूमिका अधिक ना हो जाये।

विरोधाभासी दृष्टिकोण

यह कहना गलत नहीं होगा कि चीन और भारत कई सामरिक और सभ्यतागत मुद्दों पर विरोधाभासी दृष्टिकोण रखते हैं। इनमें एशियाई सुरक्षा की प्रकृति, क्षेत्रीय स्थिरता और क्षेत्र में अमेरिका की भूमिका शामिल है। यदि चीन-पाकिस्तान का संबंध काफी मजबूत है तो संयुक्त राष्ट्र द्वारा जैश-ए-मोहम्मद प्रमुख मसूद अजहर को वैश्विक आतंकवादी के रूप में नामित करना, चीन-पाकिस्तान संबंधों में दरार डालने का कार्य करेगा।

वुहान शिखर सम्मेलन के बाद, भारत-चीन संबंधों के आसपास की परिस्थितियों के लगातार बदलने से कई चीजें बदल गई हैं। उदाहरण के लिए, चीन और अमेरिका के बीच संबंध तेजी से बिगड़े हैं। अमेरिका के अलावा, पश्चिम के अधिकांश राष्ट्र चीन के संदर्भ में नरम रवैया दिखा रहे हैं। जहाँ एक तरफ 2018 में चीन-रूस संबंध 2018 के मध्य तक पूर्वी एशिया में प्रभाव का एक विशिष्ट क्षेत्र बना रहा है, वही दूसरी तरफ नए सरेखण के साथ वर्ष 2019 में भारत-रूस संबंध भी अधिक मजबूत होते हुए प्रतीत हो रहे है। भारत और जापान, पूर्व एशियाई क्षेत्र में समीकरणों को बदलते हुए दिखाई देते हैं। चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) भी कई देशों के विरोध के चपेट में आ गया है, यहां तक कि इसका विरोध उन देशों द्वारा भी किया जा रहा है जो पहले चीन को एक शानदार राष्ट्र के रूप में देखते थे।

वर्तमान में चीन खुद घरेलू परेशानियों से घिरा हुआ प्रतीत होता है। चीन की इक्विटी और मुद्रा बाजारों में मिल रहे झटके और विकास दर में गिरावट के कारण 2018 की शुरुआत में ही चीनी अर्थव्यवस्था कहीं अधिक नाजुक दिखी। तिब्बत में अशांति, शिनजियांग में कट्टरपंथी चरमपंथी समूहों द्वारा किए गए अतिक्रमण और हांगकांग में उत्पन्न नवीनतम मोड़ जैसी आंतरिक सुरक्षा चिंताओं ने भी स्थिति को गंभीर बना दिया हैं। चीन की आर्थिक प्रथाओं पर अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प द्वारा लगातार हमले ने निराशावाद के इस मिजाज को और बढ़ा दिया है।

चीन की चिंताएं

वर्तमान में, भारत के पास एक साल पहले की तुलना में अधिक आशावादी होने का कारण है। अमेरिका के साथ भारत के संबंधों ने एक नई ऊंचाई हासिल की है। रूस के साथ संबंधों ने एक नया आयाम हासिल कर लिया है, जिसमें दीर्घकालिक सैन्य संबंधों के साथ आर्थिक संबंध भी शामिल है। रूस के सुदूर पूर्व को विकसित करने के लिए भारत की क्रेडिट लाइन ने भारत-रूस संबंधों की प्रकृति को मौलिक रूप से बदल दिया है। जापान के साथ भारत के संबंध बहुत मजबूत हुए हैं। क्वाड (अमेरिका, भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया) ने संबंधों को एक नया आयाम प्रदान किया है।

ऐसे तथ्य निश्चित रूप से चीन को सोचने के लिए मजबूर करेंगे। इसके अतिरिक्त, भारत द्वारा हाल की कुछ कार्रवाइयों ने भारत के इरादों के संदर्भ में चीन के मन में संदेह पैदा कर सकता है, जो कि शिखर सम्मेलन के परिणाम को प्रभावित कर सकते हैं। हालांकि, भारत द्वारा दलाई लामा के मुद्दे को दरकिनार करने की कोशिश एक हद तक चीन को खुश कर सकता है।

इसके अलावा, लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में किसी भी तरह की घटनाएं, जिसमें चीन की दिलचस्पी अधिक रहती है, इस समय चीन को उकसाने के लिए काफी होगा। उदाहरण के लिए, भारत द्वारा हाल ही में पूर्वी लद्दाख के चुशुल के पास 'सुपर हाई एल्टीट्यूड' क्षेत्र में 'सभी हथियारों का एकीकृत' अभ्यास, जिसका नाम 'चंगथांग प्रहार' यानि हमला है, की घोषणा, जिसमें टैंक, आर्टिलरी गन, ड्रोन, हेलिकॉप्टर और सैन्य अभ्यास शामिल हैं, चीन द्वारा एक खतरे के रूप में ही देखा जाएगा। इसके साथ ही, सैन्य विमानों के उपयोग और प्रस्तावित प्रमुख युद्ध अभ्यास के लिए अरुणाचल प्रदेश के विजयनगर में एडवांस लैंडिंग ग्राउंड को फिर से खोलना, जिसमें नए इंटीग्रेटेड बैटल ग्रुप्स अभ्यास करेंगे, चीन की चिंताओं को और बढ़ाएगा।

जिस तरह से चीनी दिमाग काम करता है, उससे कोई भी यह समझ सकता है कि वार्ता की असफलता चीन को और भी अधिक आक्रामक बना देगी। इसलिए, भारत को बेहद सतर्कता के साथ आगे बढ़ने की जरूरत है, ऐसा न हो कि चीन कुछ इस तरह से प्रतिक्रिया दे, जिससे 'वुहान भावना' कमजोर हो जाए। भारत को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह उस बिंदु पर चीन को ना उकसाए, जिससे उसमें प्रतिकार की भावना उत्पन्न हो जाए।

सावधानी से चलना

शिखर सम्मेलन की तैयारियों के हिस्से के रूप में, श्री मोदी के सलाहकारों को 2019 में चीन और सिनाफोन दुनिया (चीनी भाषी दुनिया) की बहुआयामी समझ अपनाने की सलाह दी जाएगी। आज 2018 की तुलना में चीन की समझ के बारे में अधिक समग्र समझ प्राप्त करना और भी महत्वपूर्ण है।

गणतंत्र की 70वीं वर्षगांठ के बाद, राष्ट्रपति शी पहले ही एक नए चीन के निर्माण के लिए 'महान संघर्ष' की बात कर चुके हैं। वह स्पष्ट रूप से 'जीत हासिल करने के लिए संघर्ष' के माओवादी काल के विपरीत होने की मांग कर रहे है।

यदि भारत देखभाल और सावधानी से आगे नहीं बढ़ता है, तो मामल्लपुरम शिखर सम्मेलन वुहान से एक कदम पीछे साबित हो सकता है। तैयारियों और उचित रणनीति के साथ, आगामी बैठक भारत के नेताओं को एक यथार्थवादी अनुमान प्रदान कर सकती है कि भारत-चीन संबंध किस दिशा में बढ़ रहा हैं।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. भारत और चीन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:-

1. 2018 में वुहान शिखर सम्मेलन रणनीतिक संचार के उच्च स्तर को सुनिश्चित करने के लिए सम्पन्न किया गया था।
2. 2019 में मामल्लपुरम में आयोजित दूसरी अनौपचारिक वार्ता दोनों देश के संबंध के लिए महत्त्वपूर्ण है।
3. अरूणाचल प्रदेश के विजयनगर में एडवांश लैंडिंग ग्राउंड को फिर से खोलना जिसमें नए इंटीग्रेटेड बैटल ग्रुप्स अभ्यास करेंगे जो दोनों के संबंध पर प्रभाव डालेगा।

उपर्युक्त कथनों में से कौन से कथन असत्य हैं?

(a) 1 और 2 (b) 2 केवल 3

(c) 1 और 3 (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Expected Questions (Prelims Exams)

1. Consider the following statements in the context of India and China-

1. The 2018 Wuhan summit was held to ensure a high level of strategic communication.
2. The second informal dialogue held in Mamallapuram in 2019 is important for the relationship between the two countries.
3. Reopening of Advance Landing Ground at Vijayanagar in Arunachal Pradesh in which the newly Integrated Battle Groups will practice which will have impact on the relationship of the two countries

Which of the statements given above is / are incorrect?

(a) 1 and 2 (b) 2 and 3

(c) 1 and 3 (d) None of the above

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: 'भारत-चीन के मध्य प्रस्तावित मामल्लपुरम शिखर सम्मेलन दोनों देशों के लिए क्यों महत्वपूर्ण है? आपके अनुसार वर्तमान में किन मुद्दों को इस सम्मेलन में प्राथमिकता देने की आवश्यकता है? चर्चा कीजिए।

'Why is the proposed Mamallapuram Summit between India and China important for both countries? According to you, which issues need to be given priority in this conference? Discuss

(250 Words)

नोट : 4 अक्टूबर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (c) होगा।